पु॰ना International School
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Std-VIII Subject-Hindi

PERIODIC ASSESSMENT- 3 (2021-22)

प्र–१ अपठित गद्यांश और पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1)मनुष्य को चाहिए कि संतुलित रहकर अति के मार्गों का त्यागकर मध्यम मार्ग को अपनाए। अपने सामर्थ्य की पहचान कर उसकी सीमाओं के अंदर जीवन बिताना एक कठिन कला है। सामान्य पुरुष अपने अहं के वशीभूत होकर अपना मूल्यांकन अधिक कर बैठता है और इसी के फलस्वरूप वह उन कार्यों में हाथ लगा देता है जो उसकी शक्ति में नहीं हैं। इसलिए सामर्थ्य से अधिक व्यय करने वालों के लिए कहा जाता है कि 'तेते पाँव पसारिए, जेती लांबी सौर'। उन्हीं के लिए कहा गया है कि अपने सामर्थ्य , को विचार कर उसके अनुरूप कार्य करना और व्यर्थ के दिखावे में स्वयं को न भुला देना एक कठिन साधना तो अवश्य है, पर सबके लिए यही मार्ग अनुकरणीय है।

प्रश्न

(क) अति का मार्ग क्या होता है?
(i) असंतुलित माग
(ii) संतुलित मार्ग
(iii) अमर्यादित मार्ग
(iv) मध्यम मार्ग

(ख) कठिन कला क्या है?
(i) सामर्थ्य के बिना सीमारहित जीवन बिताना
(ii) सामर्थ्य को बिना पहचाने जीवन बिताना
(iii) सामर्थ्य की सीमा में जीवन बिताना
(iv) सामर्थ्य न होने पर भी जीवन बिताना

(ग) मनुष्य अहं के वशीभूत होकर
(i) अपने को महत्त्वहीन समझ लेता है।
(ii) किसी को महत्त्व देना छोड़ देता है।
(iii) अपना सर्वस्व खो बैठता है।
(iv) अपना अधिक मूल्यांकन कर बैठता है।

(घ) "तेते पाँव पसारिए, जेती लांबी सौर' का आशय है
(i) सामर्थ्य के अनुसार कार्य न करना
(ii) सामर्थ्य के अनुसार कार्य करना
(iii) व्यर्थ का दिखावा करना
(iv) आय से अधिक व्यय करना

(ङ) प्रस्तुत गद्यांश का शीर्षक हो सकता है
(i) आय के अनुसार व्यय
(ii) दिखावे में जीवन बिताना
(iii) सामर्थ्य से अधिक व्यय करना
(iv) सामर्थ्य के अनुसार कार्य करना

उत्तर-
(क) (iii)

(ख) (iii)
(ग) (iv)
(घ) (ii)
(ङ) (iv)

2)सुख विश्वास से उत्पन्न होता है। सुख जड़ता से भी उत्पन्न होता है। पुराने जमाने के लोग सुखी इसलिए थे कि ईश्वर की सत्ता में उन्हें विश्वास था। उस जमाने के नमूने आज भी हैं, मगर वे महानगरों में कम मिलते हैं। उनका जमघट गाँवों, कस्बों या छोटे-छोटे नगरों में है। इनके बहुत अधिक असंतुष्ट न होने का कारण यह है कि जो चीज़ उनके बस में नहीं है, उसे वे अदृश्य की इच्छा पर छोड़कर निश्चित हो जाते हैं। इसी प्रकार सुखी वे लोग भी होते हैं, जो सच्चे अर्थों में जड़तावादी हैं, क्योंकि उनकी आत्मा पर कठखोदी चिड़िया चोंच नहीं मारा करती, किंतु जो न जड़ता को स्वीकार करता है, न ईश्वर के अस्तित्व को तथा जो पूरे मन से न तो जड़ता का त्याग करता है और न ईश्वर के अस्तित्व का, असली वेदना उसी संदेहवादी मनुष्य की वेदना है। पश्चिम का आधुनिक बोध इसी पीड़ा से ग्रस्त है। वह न तो मनुष्य भैंस की तरह खा-पीकर संतुष्ट रह सकता है न अदृश्य का अवलंब लेकर चिंतामुक्त हो सकता है। इस अभागे मनुष्य के हाथ में न तो लोक रह गया है, न परलोक। लोक इसलिए नहीं कि वह भैंस बनकर जीने को तैयार नहीं है और परलोक इसलिए नहीं कि विज्ञान उसका समर्थन नहीं करता। निदान, संदेहवाद के झटके खाता हुआ यह आदमी दिन-रात व्याकुल रहता है और रह-रहकर आत्महत्या की कल्पना करके अपनी व्याकुलता का रेचन करता रहता है।

प्रश्न

(क) सुख किनसे उत्पन्न होता है?
(i) विश्वास
(ii) जड़ता
(iii) (क) व (ख)
(iv) कोई नहीं

(ख) गाँवों में लोग असंतुष्ट नहीं हैं क्योंकि
(i) वे अदृश्य पर अपनी चिंता छोड़ देते हैं।
(ii) उनके पास सभी सुविधाएँ हैं।
(iii) वे शक्तिशाली हैं।
(iv) कोई नहीं।

(ग) सुखी वे होते हैं जो
(i) जड़ता को स्वीकार नहीं करते
(ii) ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते
(iii) (क) व (ख)
(iv) कोई नहीं

(घ) पश्चिम का आधुनिक बोध किससे पीड़ित है
(i) संदेहवादी दृष्टि
(ii) आस्तिकवाद
(iii) अस्तित्ववाद
(iv) कोई नहीं

(ङ) 'विश्वास' का विलोम है
(i) अविश्वास
(ii) धोखा
(iii) भेदभाव
(iv) कोई नहीं

3)वीरता की अभिव्यक्ति अनेक प्रकार से होती है। लड़ना-मरना, खून बहाना, तोप-तलवार के सामने न झुकना ही नहीं कर्ण की भाँति याचक को खाली हाथ न लौटाना या बुद्ध की भाँति गूढ़ तत्वों की खोज में सांसारिक सुख त्याग देना भी वीरता ही। है। वीरता तो एक अंत:प्रेरणा है। वीरता देश-काल के अनुसार संसार में जब भी प्रकट हुई, तभी अपना एक नया रूप लेकर आई और लोगों को चकित कर गई। वीर कारखानों में नहीं ढलते, न खेतों में उगाए जाते हैं, वे तो देवदार के वृक्ष के समान जीवनरूपी वन में स्वयं उगते हैं, बिना किसी के पानी दिए, बिना किसी के दूध पिलाए बढ़ते हैं। वीर का दिल सबका दिल और उसके विचार सबके विचार हो जाते हैं। उसके संकल्प सबके संकल्प हो जाते हैं। औरतों और समाज का हृदय वीर के हृदय में धड़कता है।

प्रश्न

(क) वीरता के प्रकार हैं

(i) लड़ाई

(ii) याचक को खाली हाथ न जाने देना

(iii) ज्ञान की खोज में संसार-त्याग

(iv) उपर्युक्त सभी

(ख) उपयुक्त शीर्षक दीजिए

(i) वीरता

(ii) वीरों का उद्भव

(iii) वीरता का महत्व

(iv) कोई नहीं

(ग) वीर कहाँ उत्पन्न होते हैं?

(i) वे देवदार के वृक्ष के समान स्वयं उगते हैं तथा बड़े होते हैं।

(ii) कारखानों में

(iii) खेतों में

(iv) कोई नहीं

(घ) वीर पुरुष की क्या पहचान है?

(i) वह सबका चहेता होता है।

(ii) उसके संकल्प समाज के संकल्प होते हैं।

(iii) (क) व (ख)

(iv) कोई नहीं।

(ङ) 'सुख' का विलोम है

(i) दुख

(ii) सुखी

(iii) कमज़ोर

(iv) कोई नहीं

4)हे मजूर, जो जेठ मास के इस निधूम अनल में
कर्ममग्न है अ वकल दग्ध हुआ पलपल में-;
यह मजूर, जिसके अंगों पर लपटी एक लैंगोटी;
यह मजूर, जर्जर कुटिया में जिसकी वसुधा छोटी;
कस तप में तल्लीन यहाँ है भूखप्यास को जीते-,
कस कठोर साधन में इसके युग के युग हैं बीते।
कतने महा महा धप आए, हुए वलीन क्षतिज में,
नहीं दृष्टि तक डाली इसने, नि र्वकार यह निज में।

यह अ वकंप न जाने कतने घूंट पए हैं वष के,
आज इसे देखा जब मैंने बात नहीं की इससे।
अब ऐसा लगता है, इसके तप से वश्व वकल है,
नया इंद्रपद इसके हित ही निश्चित है निस्संशय।
अर्थात् क व को लगता है क अब उसकी हालत में सुधार होगा।

1-जेठ के महीने में अपने काम में लगा हुआ मजदूर क्या अनुभव कर रहा है?
1-जेठ के महीने में अपने काम में लगा हुआ मजदूर अपने काम में मग्न है। गरम मौसम भी उसके कार्य को बा धत नहीं कर रहा है।
2-उसकी दीनहीन दशा को क व ने कस तरह प्रस्तुत कया है-?
2- क व बताता है क मजदूर की दशा खराब है। वह सर्फ एक लैंगोटी पहने हुए है। उसकी कुटिया टूटी फूटी है। वह पेट भरने भर भी नहीं कमा पाता है।
3-उसका पूरा जीवन कैसे बीता है? उसने बडेबड़े लोगों को भी अपना कष्ट क्यों नहीं बताया-से-?
3-मजदूर का पूरा जीवन तंगहाली में बीतता है। उसने बड़े से बड़े लोगों को भी अपना कष्ट नहीं-बताया, क्यों क वह अपने काम में तल्लीन रहता था।
4-आशय स्पष्ट कीजिए' :नया इंद्रपद इसके हित ही निश्चित है निस्संशय। '
4- इसका अर्थ है क मजदूर के कठोर तप से यह लगता है क उसे नया इंद्रपद मलेगा

5) ओ नए साल, कर कुछ कमाल, जाने वाले को जाने दे.
दिल से अ भनंदन करते हैं, कुछ नई उमंगें आने दे।
आने जाने से क्या डरना, ये मौसम आतेजाते हैं-,
तन झुलसे शखर दुपहरी में कभी बादल भी छा जाते हैं।
इक वह मौसम भी आता है, जब पत्ते भी गर जाते हैं,
हर मौसम को मनमीत बना, नवगीत खुशी के गाने दे।
जो भूल हुई जा भूल उसे, अब आगे भूल सुधार तो कर,
बदले में प्यार मलेगा भी, पहले औरों से प्यार तो कर,
फूटेंगे प्यार के अंकुर भी, वह जमीं ज़रा तैयार तो कर,
भले जीत का जश्न मना, पर हार को भी स्वीकार तो कर,
मत नफरत के शोले भड़का, बस गीत प्यार के गाने दे।
1.काव्यांश का शीर्षक ल खए।
1-काव्यांश का शीर्षक हैनए साल का अ भनंदन।
2.'वह ज़मीं ज़रा तैयार तो कर' पंक्ति में निहित अलंकार का नाम बताइए।
2-'वह ज़मीं ज़रा तैयार तो कर' पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है।

3.क व नए साल से क्या अपेक्षा रखता है**?**

3-क व नए साल से यह अपेक्षा रखता है क वह कुछ वशेष करे और सबके लए नई उमंगें लाए।

4.'आने-जाने से क्या डरना' के माध्यम से क व कसके आने-जाने की बात कहता है**?** इसके लए प्रकृति से कन-कन उदाहरणों का सहरा लेता है **?**

4-आने-जाने के माध्यम से क व ने सुख और दुख के आने-जाने की बात कही है। इसके लए उसने मौसमों के बदलते रहने, दोपहरी में बादल छाने, पतझड़ के आने-जाने के उदाहरणों का सहारा लया है।

5.क व ने क वता में मनुष्य के लए जो सीख दी है**,** उसे स्पष्ट कीजिए।

5-क वता के माध्यम से क व ने मनुष्य को सीख दी है क

(क) पीछे हो चुकी भूलों का सुधार करें।

(ख) दूसरों से प्यार पाने के लए उनसे प्यार करें।

(ग) दुख और सुख को समान रूप से अपनाना सीखें।

(घ) घृणा फैलाना बंद करके प्रेम के गीत गाएँ।

(साहित्य-विभाग)

*** समान शब्द लिखिए।**

मिसाल- उदाहरण
मैली- गन्दी
मुफ्त- फोकट
हवाला- उल्लेख करना
कामचोर- आलसी
दबैल- दब्बू
घमासान- भयानक
हरगिज- बिलकुल
पगा- पगड़ी
झगा- कुरता
तन- शरीर
द्वार - दरवाजा
काहे न देत- किस कारण
चाँपि- छिपाना
पोटरी- पोटली
चाबि- चबाना
पर्याउे- अनजान
मारग- रास्ता
छानी- झोंपड़ी
कंचन- सोने
धाम- महल
पनही- जूता
चौंकने- हैरानी
नवसाक्षर- नयी पढ़ी लिखी
स्वाधीनता-आज़ादी
गतिशीलता- प्रगति
अभिव्यक्त- प्रकट
प्रतीक- निशानी
कौशल- प्रवीणता
शिविर- सीखने के कैंप
फब्तियाँ- ताने

* लघु प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1) बच्चों के उधम मचाने के कारण घर कि क्या दुर्दशा हुई?

उ- बच्चों के उधम मचाने से घर की सारी व्यवस्था ख़राब हो गई। मटके-सुराहियाँ इधर-उधर लुढक गए। घर के सारे बर्तन अस्त-व्यस्त हो गए। पशु-पक्षी इधर-उधर भागने लगे। घर में

धुल, मिट्टी और कीचड़ का ढेर लग गया। मटर की सब्जी बनने से पहले भेड़ें खा गई। मुर्गे-मुर्गियों के कारण कपड़े गंदे हो गए।

2)"कामचोर "कहानी क्या संदेश देती है?

उ- यह एक हास्यप्रधान कहानी है। यह कहानी संदेश देती है की बच्चों को उनके स्वभाव के अनुसार, उम्र और रूचि ध्यान में रखते हुए काम करना चाहिए। जिससे वे बचपन से ही रचनात्मक कार्यों में लगन तथा रूचि का परिचय दे सकें। उनके ऊपर बड़ों की जिम्मेदारी थोपना बचपन को कुचलना है। अतः बड़ों को चाहिए की समझदार बच्चा बनकर बच्चों के बीच रहें और उन्हें सही दिशा प्रदान करें।

3) सुदामा की दीनदशा देखकर श्रीकृष्ण की क्या मनोदशा हुई?

उत्तर- सुदामा की हालत देखकर श्रीकृष्ण को बहुत दुख हुआ। दुख के कारण श्री कृष्ण की आँखों से आँसू बहने लगे। उन्होंने सुदामा के पैरों को धोने के लिए पानी मँगवाया। परन्तु उनकी आँखों से इतने आँसू निकले कि उन्ही आँसुओं से सुदामा के पैर धुल गए।

4)पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए। पंक्ति में वर्णित भाव का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर- प्रस्तुत दोहे में यह कहा गया है कि श्रीकृष्ण ने अपने बालसखा सुदामा के आगमन पर उनके पैरों को धोने के लिए परात में पानी मंगवाया परन्तु सुदामा की दुर्दशा देखकर उनको इतना कष्ट हुआ कि आँसुओं से ही सुदामा के पैर धुल गए। अर्थात् परात में लाया गया जल व्यर्थ हो गया।

5)अपने गाँव लौटकर जब सुदामा अपनी झोंपड़ी नहीं खोज पाए तब उनके मन में क्या-क्या विचार आए?

उत्तर- द्वारका से लौटकर सुदामा जब अपने गाँव वापस आएँ तो अपनी झोंपड़ी के स्थान पर बड़े-बड़े भव्य महलों को देखकर सबसे पहले तो उनका मन भ्रमित हो गया कि कहीं वे घूम फिर कर वापस द्वारका ही तो नहीं चले आए। फिर सबसे पूछते फिरते हैं तथा अपनी झोपड़ी को ढूँढ़ने लगते हैं।

6)शुरूआत में पुरुषों ने इस आंदोलन का विरोध किया परंतु आर-साइकिल्स के मालिक ने इसका समर्थन किया, क्यों?

उत्तर- शुरूआत में पुरुषों ने इस आंदोलन का विरोध किया परंतु आर-साइकिल्स के मालिक ने इसका समर्थन किया, क्योंकि आर-साइकिल्स के मालिक की आय में वृद्धि हो रही थी। यहाँ तक की लेडीज़ साइकिल कम होने से महिलाऐ जेंट्स साइकिल भी खरीद रही थी। आर-साइकिल्स के मालिक ने आंदोलन का समर्थन स्वार्थवश किया।

7) प्रारंभ में इस आंदोलन को चलाने में कौन-कौन सी बाधा आई?

उत्तर- प्रारम्भ में साइकिल आंदोलन चलाने में कुछ मुश्किलें आईं जैसे-

- सर्वप्रथम गाँव के लोग बहुत ही रूढ़िवादी थे। उन्होंने महिलाओँ के उत्साह को तोड़ने का प्रयास किया।
- महिलाओँ के साइकिल चलाने पर उन पर फ़ब्तियाँ कसी।
- महिलाओँ के पास साइकिल शिक्षक का अभाव था, जिसके लिए उन्होंने स्वयं साइकिल सिखाना आरम्भ किया और आंदोलन की गति पर कोई असर नहीं पड़ने दिया।

8) आपके विचार से लेखक ने इस पाठ का नाम जहाँ पहिया है? क्यों रखा होगा?

उत्तर- पहिया गति का प्रतीक है। लेखक ने इस पाठ का नाम "जहाँ पहिया है" तमिलनाडु के पुडुकोट्टई गाँव के साइकिल आंदोलन के कारण ही रखा होगा। उस जिले की महिलाओं ने साइकिल चलाना शुरू किया, तब से उनकी परिस्थिति में सुधार आया तथा उनके विकास को गति मिली। इसिलए लेखक कहते है कि ये बात उस जिले की है "जहाँ पहिया है"।

*दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1) क्या आप लेखक की इस बात से सहमत हैं?

उत्तर- हम लेखक की बात से पूर्ण सहमत हैं क्योंकि जब-जब किसी पर जंजीरे कसी जाती है तो वह इन रूढ़ियों के बंधनों को तोड़ डालती है। समय के साथ-साथ विचारधाराओं में भी परिवर्तन होता रहता है जब ये परिवर्तन होने प्रारम्भ होते हैं तो समाज में एक जबरदस्त बदलाव आता है जो उसकी सोचने-समझने की धारा को ही बदल देता है। मनुष्य आजाद स्वभाव का प्राणी है। वह रूढ़ियों के बंधन को बर्दाश्त नहीं करता और उसे तोड़ देता है। जैसे तमिलनाडु के पुडुकोट्टई गाँव में हुआ है। महिलाओं ने साइकिल चलाना आरम्भ किया और समाज में एक नई मिसाल रखी।

2) निर्धनता के बाद मिलने वाली संपन्नता का चित्रण कविता की अंतिम पंक्तियों में वर्णित है। उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- निर्धनता के बाद श्रीकृष्ण की कृपा से सुदामा को धन-सम्पदा मिलती है। जहाँ सुदामा की टूटी-फूटी सी झोंपड़ी हुआ करती थी, वहाँ अब स्वर्ण भवन शोभित है। कहाँ पहले पैरों में पहनने के लिए चप्पल तक नहीं थी और अब पैरों से चलने की आवश्यकता ही नहीं है क्योंकि अब घूमने के लिए हाथी घोड़े हैं, पहले सोने के लिए केवल यह कठोर भूमि थी और आज कोमल सेज पर नींद नहीं आती है, कहाँ पहले खाने के लिए चावल भी नहीं मिलते थे और आज प्रभु की कृपा से खाने को किशमिश-मुनक्का भी उप्लब्ध हैं। परन्तु वे अच्छे नहीं लगते।

3) द्वारका से खाली हाथ लौटते समय सुदामा मार्ग में क्या-क्या सोचते जा रहे थे? वह कृष्ण के व्यवहार से क्यों खीझ रहे थे?

उत्तर- द्वारका से खाली हाथ लौटते समय सुदामा का मन बहुत दुखी था। वे कृष्ण द्वारा अपने प्रति किए गए व्यवहार के बारे में सोच रहे थे कि जब वे कृष्ण के पास पहुँचे तो कृष्ण ने आनन्द पूर्वक उनका आतिथ्य सत्कार किया था। क्या वह सब दिखावटी था? वे कृष्ण के व्यवहार से खीझ रहे थे क्योंकि केवल आदर-सत्कार करके ही श्रीकृष्ण ने सुदामा को खाली हाथ भेज दिया था। वे तो कृष्ण के पास जाना ही नहीं चाहते थे। परन्तु उनकी पत्नी ने उन्हें जबरदस्ती मदद पाने के लिए कृष्ण के पास भेजा। उन्हें इस बात का पछतावा भी हो रहा था कि माँगे हुए चावल जो कृष्ण को देने के लिए भेंट स्वरूप लाए थे, वे भी हाथ से निकल गए और कृष्ण ने उन्हें कुछ भी नहीं दिया।

4) "चोरी की बान में हौ जू प्रवीने।"

उपर्युक्त पंक्ति कौन, किससे कह रहा है?

इस कथन की पृष्ठभूमि स्पष्ट कीजिए।

इस उपालंभ "शिकायत" के पीछे कौन-सी पौराणिक कथा है?

उत्तर- यहाँ श्रीकृष्ण अपने बालसखा सुदामा से कह रहे हैं कि तुम्हारी चोरी करने की आदत या छुपाने की आदत अभी तक गई नहीं। लगता है इसमें तुम पहले से अधिक कुशल हो गए

हो। सुदामा की पत्नी ने श्रीकृष्ण के लिए भेंट स्वरूप कुछ चावल भिजवाए थे। संकोचवश सुदामा श्रीकृष्ण को यह भेंट नहीं दे पा रहे हैं। क्योंकि कृष्ण अब द्वारिका के राजा हैं और उनके पास सब सुख-सुविधाएँ हैं। परन्तु श्रीकृष्ण सुदामा पर दोषारोपण करते हुए इसे चोरी कहते हैं और कहते हैं कि चोरी में तो तुम पहले से ही निपुण हो।

इस शिकायत के पीछे एक पौरोणिक कथा है। जब श्रीकृष्ण और सुदामा आश्रम में अपनी-अपनी शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। उस समय एक दिन वे जंगल में लकड़ियाँ चुनने जाते हैं। गुरूमाता ने उन्हें रास्ते में खाने के लिए चने दिए थे। सुदामा श्रीकृष्ण को बिना बताए चोरी से चने खा लेते हैं। उसी चोरी की तुलना करते हुए श्रीकृष्ण सुदामा को दोष देते हैं।

5) बड़े होते बच्चे किस प्रकार माता-पिता के सहयोगी हो सकते हैं और किस प्रकार भार? कामचोर कहानी के आधर पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उ- अगर बच्चों को बचपन से अपना कार्य स्वयं करने की सीख दी जाए तो बड़े होकर बच्चे माता-पिता के बहुत बड़े सहयोगी हो सकते हैं। वह अगर अपने आप नहा धोकर स्कूल के लिए तैयार हो जाएँ, अपने जुराब स्वयं धो लें व जूते पालिश कर लें, अपने खाने के बर्तन यथा सम्भव स्थान पर रख आएँ, अपने कमरे को सहज कर रखें तो माता-पिता का बहुत सहयोग कर सकते हैं। यदि इससे उलटा हम बच्चों को उनका कार्य करने की सीख नहीं देते तो वह सहयोग के स्थान पर माता-पिता के लिए भार ही साबित होंगे। उनके बड़ा होने पर उनसे कोई कार्य कराया जाएगा तो वह उस कार्य को भली-भांति करने के स्थान पर तहस-नहस ही कर देंगे, जैसे की कामचोर लेख पर बच्चों ने सारे घर का हाल कर दिया था।

6) भरा-पूरा परिवार कैसे सुखद बन सकता है और कैसे दुखद? कामचोर कहानी के आधर पर निर्णय कीजिए।

उ- यदि सारा-परिवार मिल जुलकर कार्य करे तो घर को सुखद बनाया जा सकता है। इससे घर के किसी भी सदस्य पर अधिक कार्य का दबाव नहीं पड़ेगा। सब अपनी अपनी कार्यक्षमता के आधार पर कार्य को बाँट लें व उसे समय पर निपटा लें तो सब को एक दूसरे के साथ वक्त बिताने का अधिक समय मिलेगा इससे सारे घर में आपसी प्रेम का विकास होगा और खुशहाली ही खुशहाली होगी। इसके विपरीत यदि घर के सदस्य घर के कामों के प्रति बेरूखा व्यवहार रखेंगे और किसी भी काम में हाथ नहीं बटाएँगे तो सारे घर में अशांति ही फैलेगी, घर में खर्च का दबाव बनेगा, घर के सभी सदस्य कामचोर बन जाएँगे और अपने कामों के लिए सदैव दूसरों पर निर्भर रहेंगे जिससे एक ही व्यक्ति पर सारा दबाव बन जाएगा। यदि इन सबसे निपटने की कोशिश की गई तो वही हाल होगा जो कामचोर में घर के बच्चों ने घर का किया था। वे घर की शन्ति व सुःख को एक ही पल में बर्बाद कर देंगे। इसलिए चाहिए कि बचपन से ही बच्चों को उनके काम स्वयं करने की आदत डालनी चाहिए ताकि उन्हें आत्मनिर्भर भी बनाया जाए और घर के प्रति ज़िम्मेदार भी।

7) "या तो बच्चा राज कायम कर लो या मुझे ही रख लो। "अम्मा ये कब कहा और इसका परिणाम क्या हुआ?

उ- अम्मा ने बच्चों द्वारा किए गए घर की हालत को देखकर ऐसा कहा था। जब पिताजी ने बच्चों को घर के काम काज में हाथ बँटाने की नसीहत दी तब उन्होंने किया इसके विपरीत सारे घर को तहस-नहस किया। चारों तरफ़ समान बिखरा दिया, मुर्गियों और भेड़ों को घर में घुसा दिया। जिसका परिणाम यह हुआ कि काम करने के बजाए उन्होंने घर का काम कई गुना बढ़ा दिया जिससे अम्मा जी बहुत परेशान हो गई थीं। उन्होंने पिताजी को साफ़-साफ़ कह दिया कि

या तो बच्चों से करवा लो या मैं मायके चली जाती हूँ। इसका परिणाम ये हुआ कि पिताजी ने घर की किसी भी चीज़ को बच्चों को हाथ ना लगाने की हिदायत दे डाली नहीं तो सज़ा के लिए तैयार रहने को कहा।

व्याकरण- विभाग

क्रियाविशेषण:

1) कालवाचक क्रियाविशेषण:

वो क्रियाविशेषण शब्द जो क्रिया के होने के समय के बारे में बताते हैं, कालवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। **जैसे:**

- श्यामू **कल** मेरे घर आया था।
- **परसों** बरसात होगी।
- मैंने **सुबह** खाना खाया था।
- मैं **शाम** को खेलता हूँ।
- मैं **सुबह** जल्दी उठता हूँ।
- मैं **दोपहर** में स्कूल से लौटता हूँ।
- हम अक्सर **शाम** को खेलने जाते हैं

ऊपर दिए गए उदाहरणों में आप देख सकते हैं कि क्रिया शब्द जैसे आना, खाना, होना, उठना, लौटना आदि के होने क समय के बारे में कल, सुबह, शाम, दोपहर आदि शब्द बता रहे हैं। अतः यह शब्द कालवाचक क्रियाविशेषण के अंतर्गत आयेंगे।

2. रीतिवाचक क्रियाविशेषण

ऐसे क्रियाविशेषण शब्द जो किसी क्रिया के होने की विधि या तरीके का बोध कराते हैं, वह शब्द रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं। **जैसे:**

- सुरेश **ध्यान से** चलता है।
- वह **फटाफट** खाता है।
- अमित **गलत चाल** चलता है।
- उमेश **हमेशा सच** बोलता है।
- पियूष **अच्छी तरह** काम करता है।
- नरेन्द्र **ध्यान पूर्वक** पढ़ाई करता है।
- शेर **धीरे-धीरे** आगे बढ़ता है।

ऊपर दिए गए उदाहरणों में जैसा कि आप देख सकते हैं कि ध्यान से, फटाफट, गलत, हमेशा, सच, अच्छी तरह, ध्यान पूर्वक, धीरे-धीरे आदि शब्द खाना, चलना, बोलना आदि क्रियाओं कि विशेषता बता रहे हैं। अतः यह शब्द रीतिवाचक क्रियाविशेषण के अंतर्गत आयेंगे।

3. स्थानवाचक क्रियाविशेषण :

ऐसे अविकारी शब्द जो हमें क्रियाओं के होने के स्थान का बोध कराते हैं, वे शब्द स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। **जैसे:**

- तुम **अन्दर** जाकर बैठो।
- मैं **बाहर** खेलता हूँ।
- हम **छत** पर सोते हैं।
- मैं **पेड़ पर** बैठा हूँ।
- शशि मुझसे **बहुत दूर** बैठी है।
- मुरारी **मैदान में** खेल रहा है।
- तुम अपने **दाहिने ओर** गिर जाओ।

जैसा कि आप ऊपर दिए गए उदाहरणों में देख सकते हैं कि अन्दर, बाहर, छत पर, पेड़ पर, दूर, मैदान में, दाहिने आदि शब्द हमें बैठना, खेलना, सोना, गिरना आदि क्रियाओं के होने के स्थान का बोध करा रहे हैं। हम यह भी जानते है की जब कोई शब्द हमें किसी क्रिया के होने के स्थान का बोध कराते हैं, ऐसे शब्द स्थानवाचक क्रियाविशेषण के अंतर्गत आते हैं।

4. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

ऐसे क्रियाविशेषण शब्द जिनसे हमें क्रिया के परिमाण, संख्या या मात्र का पता चलता है, वे शब्द परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। **जैसे:**

- तुम थोड़ा **अधिक** खाओ।
- अमृत बहुत **ज्यादा** दौड़ता है।
- मोहन **अधिक** खाना खाता है।
- आयुष उसके दोस्त से **ज्यादा** पढता है।
- अभी तक तुमने **पर्याप्त** नींद नहीं ली।

जैसा कि आप ऊपर दिए गए उदाहरणों में देख सकते हैं कि अधिक, ज्यादा, पर्याप्त आदि शब्द खाना, दौड़ना, सोना, पढ़ना आदि क्रियाओं का परिमाप या मात्र का बोध कराते हैं। परिभाषा से हमें यह जान पड़ता है की ऐसे शब्द जो हमें क्रिया के होने की मात्रा एवं संख्या के बोध कराते हैं ऐसे शब्द परिमाणवाचक क्रियाविशेषण के अंतर्गत आते हैं।

➢ वाच्य

कर्तृवाच्य:

1. लड़किया बाजार जा रही है।
2. मैं रामायण पढ़ रहा हूँ।
3. ममता ने रामायण पढ़ी।
4. लता गाना गाएगी।
5. धर्मवीर वेद पढ़ेगा।
6. तुम फूल तोड़ोगे।
7. नौकर चाय लाएगा।

कर्मवाच्य:

1. लड़कियों द्वारा बाजार जाया जा रहा है।
2. मेरे द्वारा रामायण पढ़ी जा रही है।
3. ममता से रामायण पढ़ी गई।
4. लता से गाना गाया जाएगा।
5. धर्मवीर से वेद पढ़ा जाएगा।
6. तुमसे फूल तोड़े जाएंगे।
7. नौकर द्वारा चाय लाई जाएगी।

भाववाच्य:

1. राम से तेज दौड़ा जाता है।
2. मुझसे सर्दियों में नहीं नहाया जाता।
3. आशा से नहीं हँसा जाता।
4. बच्चे से खूब सोया गया।
5. रमा से पढ़ा नहीं जाता।
6. मुझसे हँसा जाता है।
7. मोर से ऊँचा नहीं उड़ा जाता ।

➢ मुहावरा

1) रंग बदलना (परिवर्तन होना)-
जमाने का रंग बदल गया है।

2) अपना-सा मुँह लेकर रह जाना (शर्मिन्दा होना)-
आज मैंने ऐसी चुभती बात कही कि वे अपना-सा मुँह लिए रह गये।

3) अपनी खिचड़ी अलग पकाना (स्वार्थी होना, अलग रहना)-
यदि सभी अपनी खिचड़ी अलग पकाने लगें, तो देश और समाज की उत्रति होने से रही।

4) खाने को दौड़ना (बहुत क्रोध में होना)-
मैं अपने ताऊजी के पास नहीं जाऊँगा, वे तो हर किसी को खाने को दौड़ते हैं।

5) खार खाना (ईर्ष्या करना)-
वह तो मुझसे खार खाए बैठा हैं, वह मेरा काम नहीं करेगा।

6) गाढ़े दिन (संकट का समय)-
रमेश गाढ़े दिनों में भी खुश रहता है।

7) चपत पड़ना (हानि अथवा नुकसान होना)-
नया मकान खरीदने में रमेश को 20 हजार की चपत पड़ी।

8) चहल-पहल होना (रौनक होना)-
दिवाली के कारण आज बाजार में बहुत चहल-पहल है।

9) चाकरी बजाना (सेवा करना)-
रामकमल ने अपने अधिकारी की खूब चाकरी बजाई फिर भी उसका प्रमोशन न हो सका।

10) मुँह मोड़ना (उपेक्षा करना)-
जब ईश्वर ही मुँह मोड़ लेता है तब दुनिया में कोई सहारा नहीं बचता।

लेखन -विभाग

* अनुच्छेद

आलस्य पर अनुच्छेद

ऐसी मानसिक या शारीरिक शिथिलता जिसके कारण किसी काम को करने में मन नहीं लगता आलस्य है । कार्य करने में अनुत्साह आलस्य है । सुस्ती और काहिली इसके पर्याय हैं । संतोष की यह जननी है, जो -मानवीय प्रगति में बाधक है । वस्तुतः यह ऐसा राजरोग है, जिसका रोगी कभी नहीं संभलता । असफलता, पराजय और विनाश आलस्य के -अवश्यम्भावी परिणाम हैं ।आलसियों का सबसे बड़ा सहारा "भाग्य" होता है । उन लोगों का तर्क होता है कि होगा वही जो रामरुचि रखा । प्रत्येक कार्य को भाग्य के भरोसे छोड़कर आलसी व्यक्ति परिश्रम से दूर भागता है । इस पलायनवादी प्रवृत्ति के कारण आलसियों को जीवन में सफलता नहीं मिल पाती । भाग्य और परिश्रम के सम्बन्ध में विचार व्यक्त करते हुए सभी विचारकों ने परिश्रम के महत्व को स्वीकार किया है और भाग्य का आश्रय लेने वालों को मूर्ख और कायर बताया है । बिना परिश्रम के तो शेर को भी आहार नहीं मिल सकता । यदि वह आलस्य में पड़ा रहे, तो भूखा ही मरेगा ।स्वामी रामतीर्थ ने आलस्य को मृत्यु मानते हुए कहा, आलस्य आपके लिए मृत्यु है और केवल उद्योग ही आपका जीवन है । संत तिरूवल्लुवर कहते हैं, उच्च कुल रूपी दीपक, आलस्य रूपी मैल लगने पर प्रकाश में घुटकर बुझ जाएगा ।संत विनोबा का विचार है, दुनिया में आलस्य बढ़ाने सरीखा दूसरा भयंकर पाप नहीं है । विदेशी विद्वान जैरेमी टेरल स्वामी रामतीर्थ से सहमति प्रकट करते हुए कहता है, आलस्य जीवित मनुष्य को दफना देताहै ।आलस्य के

दुष्परिणाम केवल विद्यार्थी जीवन में भोगने पड़ते हों, ऐसी बात नहीं । जीवन के सभी क्षेत्रों में उसके कड़वे घूंट पीने पड़ते हैं ।शरीर को थोड़ा कष्ट है, आलस्यवश उपचार नहीं करवाते । रोग धीरे-धीरे बढ़ता जाता है । जब आप डॉक्टर तक पहुँचते हैं, तब तक शरीर पूर्ण रूप से रोगग्रस्त हो चुका होता है, रोग भयंकर रूप धारण कर चुका होता है ।खाने की थाली आपके सामने है । खाने में आप अलसा रहे हैं, खाना अस्वाद बन जाएगा । घर में कुर्सी पर बैठे-बैठे छोटी-छोटी चीज के लिए बच्चों को तँग कर रहे हैं, न मिलने या विलम्ब से मिलने पर उन्हें डांट रहे हैं, पीट रहे हैं, घर का वातावरण अशांत हो उठता है-केवल आपके थोड़े से आलस्य के कारण ।आलस्य में दरिद्रता का वास है । आलस्य परमात्मा के दिए हुए हाथ-पैरों का अपमान है । आलस्य परतन्त्रता का जनक है । इसीलिए देवता भी आलसी से प्रेम नहीं करते अतः आलस्य को अपना परम शत्रु समझो और कर्तव्यपरायण बन परिस्थिति का सदुपयोग करते हुए उसे अपने अनुकूल बनाओ । कारण, कार्य मनोरथ से नहीं, उद्यम से सिद्ध होते हैं । जीवन के विकास-बीज आलस्य से नहीं, उद्यम से विकसित होते हैं

2) कंप्यूटर-आज की आवश्यकता

मानव जीवन को सुखमय बनाने के लिए विज्ञान ने अनेक साधन प्रदान किए हैं। कंप्यूटर इन्हीं साधनों में एक है, जिसकी कार्यप्रणाली और बढ़ते प्रयोग ने इसे अद्‌भुत उपकरण बना दिया है। कंप्यूटर अनेक यांत्रिक मस्तिष्कों का जटिल योग है जो काम को अत्यंत तेज़ गति, सही तरीके और कम-से-कम समय में कर सकता है। इसके काम करने की तेज़ गति इसकी लोकप्रियता का कारण बनी हुई है। गणितीय समस्याएँ हल करने में इसके जैसा दूसरा नहीं। आज कंप्यूटर हर कार्यालयों के अलावा हर घर की ज़रूरत भी बनता जा रहा है।इसके माध्यम से आरक्षण, बिलों का भुगतान, पुस्तकों का प्रकाशन, रोगों का इलाज, विभिन्न उपकरणों के पुों का निर्माण का काम सरल हुआ है। कार्यालयों में फाइलें रखने की समस्या खत्म हो गई है। कंप्यूटर के कारण अब कार्यालयों का काम घर बैठे-बिठाए किए जा रहा है। इंटरनेट के कारण इस यंत्र की उपयोगिता और भी बढ़ गई है। हमें हर काम के लिए कंप्यूटर पर आश्रित नहीं होना चाहिए। इसका प्रयोग आवश्यकतानुसार ही करना चाहिए।

3) आत्मनिर्भरता

आत्मनिर्भरता दो शब्दों आत्म और निर्भरता से बना है, जिसका अर्थ है-स्वयं पर निर्भर रहना। अर्थात् अपने कार्यों और आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए दूसरे का मुँह न ताकना। आत्मनिर्भरता उत्तम कोटि का मानवीय गुण है। इससे व्यक्ति कर्म करने लिए स्वतः प्रेरित होता है। व्यक्ति को अपनी शक्ति, योग्यता और कार्यक्षमता पर पूरा विश्वास होता है। इसी बल पर व्यक्ति उत्साहित होकर पूरी लगन से काम करता है और सफलता का वरण करता है।आत्मनिर्भरता व्यक्ति के लिए स्वतः प्रेरणा का कार्य करती है।यह प्रेरणा व्यक्ति को निरंतर आगे ही आगे ले जाती है। इससे व्यक्ति में निराशा या हीनता नहीं आने पाती है। आगे बढ़ते रहने से हम दूसरों के लिए आदर्श और अनुकरणीय बन जाते हैं। यहाँ एक बात यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि हम अति उत्साहित होकर अति आत्मविश्वासी न बन जाएँ क्योंकि इससे हमारे कदम गलत दिशा में उठ सकते हैं। अच्छा हो कि कोई कदम उठाने से पूर्व हम अपनी कार्य क्षमता का आँकलन कर लें, इससे हम असफलता का शिकार होने से बच जाएँगे, पर हमें हर परिस्थिति में आत्म निर्भर बनना चाहिए।

* संवाद लेखन

1) सब्जीवाले और ग्राहक का वार्तालाप

ग्राहक- ये मटर कैसे दिए है भाई ?
सब्जीवाला- ले लो बाबू जी ! बहुत अच्छे मटर है, एकदम ताजा।
ग्राहक- भाव तो बताओ।
सब्जीवाला- बेचे तो पंद्रह रुपये किलो हैं पर आपसे बारह रुपये ही लेंगे।
ग्राहक- बहुत महँगे है भाई !
सब्जीवाला- क्या बताएँ बाबूजी ! मण्डी में सब्जी के भाव आसमान छू रहे हैं।
ग्राहक- फिर भी ..... । कुछ तो कम करो।
सब्जीवाला- आप एक रुपया कम दे देना बाबू जी ! कहिए कितने तोल दूँ ?
ग्राहक- एक किलो मटर दे दो। और ..... एक किलो आलू भी।
सब्जीवाला- टमाटर भी ले जाइए, साहब। बहुत सस्ते हैं।
ग्राहक- कैसे ?
सब्जीवाला- पाँच रुपये किलो दे रहा हूँ। माल लुटा दिया बाबू जी।
ग्राहक- अच्छा ! दे दो आधा किलो टमाटर भी। ..... और दो नींबू भी डाल देना।
सब्जीवाला- यह लो बाबू जी। धनिया और हरी मिर्च भी रख दी है।
ग्राहक- कितने पैसे हुए ?
सब्जीवाला- सिर्फ इक्कीस रुपये।
ग्राहक- लो भाई पैसे।

2) रोगी और वैद्य

रोगी- (औषधालय में प्रवेश करते हुए) वैद्यजी, नमस्कार!
वैद्य- नमस्कार! आइए, पधारिए! कहिए, क्या हाल है ?
रोगी- पहले से बहुत अच्छा हूँ। बुखार उतर गया है, केवल खाँसी रह गयी है।
वैद्य- घबराइए नहीं। खाँसी भी दूर हो जायेगी। आज दूसरी दवा देता हूँ। आप जल्द अच्छे हो जायेंगे।
रोगी- आप ठीक कहते हैं। शरीर दुबला हो गया है। चला भी नहीं जाता और बिछावन पर पड़े-पड़े तंग आ गया हूँ।
वैद्य- चिंता की कोई बात नहीं। सुख-दुःख तो लगे ही रहते हैं। कुछ दिन और आराम कीजिए। सब ठीक हो जायेगा।
रोगी- कृपया खाने को बतायें। अब तो थोड़ी-थोड़ी भूख भी लगती है।
वैद्य- फल खूब खाइए। जरा खट्टे फलों से परहेज रखिए, इनसे खाँसी बढ़ जाती है। दूध, खिचड़ी और मूँग की दाल आप खा सकते हैं।
रोगी- बहुत अच्छा! आजकल गर्मी का मौसम है; प्यास बहुत लगती है। क्या शरबत पी सकता हूँ ?
वैद्य- शरबत के स्थान पर दूध अच्छा रहेगा। पानी भी आपको अधिक पीना चाहिए।
रोगी- अच्छा, धन्यवाद! कल फिर आऊँगा।
वैद्य- अच्छा, नमस्कार।

3) पिता और पुत्र में वार्तालाप

पिता- बेटे अतुल, कैसा रहा तुम्हारा परीक्षाफल ?
पुत्र- बहुत अच्छा नहीं रहा, पिताजी।
पिता- क्यों ? बताओ तो कितने अंक आए हैं ?
पुत्र- हिन्दी में सत्तर, अंग्रेजी में बासठ, कामर्स में अस्सी, अर्थशास्त्र में बहत्तर.....
पिता- अंग्रेजी में इस बार इतने कम अंक क्यों हैं ? कोई प्रश्न छूट गया था ?

पुत्र- पूरा तो नहीं छूटा ..... सबसे अंत में 'ऐस्से' लिखा था, वह अधूरा रह गया।
पिता- तभी तो..... । अलग-अलग प्रश्नों के समय निर्धारित कर लिया करो, तो यह नौबत नहीं आएगी। खैर, गणित तो रह ही गया।
पुत्र- गणित का पर्चा अच्छा नहीं हुआ था। उसमें केवल पचास अंक आए हैं।
पिता- यह तो बहुत खराब बात है। गणित से ही उच्च श्रेणी लाने में सहायता मिलती है।
पुत्र- पता नहीं क्या हुआ, पिताजी। एक प्रश्न तो मुझे आता ही नहीं था। शायद पाठ्यक्रम से बाहर का था।
पिता- एक प्रश्न न करने से इतने कम अंक तो नहीं आने चाहिए।
पुत्र- एक और प्रश्न बहुत कठिन था। उसमें शुरू से ही ऐसी गड़बड़ी हुई कि सारा प्रश्न गलत हो गया।
पिता- अन्य छात्रों की क्या स्थिति है ?
पुत्र- बहुत अच्छे अंक तो किसी के भी नहीं आए पर मुझसे कई छात्र आगे हैं।
पिता- सब अभ्यास की बात है बेटे ! सुना नहीं 'करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।' तुम तो स्वयं समझदार हो। अब वार्षिक परीक्षाएँ निकट है। दूरदर्शन और खेल का समय कुछ कम करके उसे पढ़ाई में लगाओ।
पुत्र- जी पिताजी ! मैं कोशिश करूँगा कि अगली बार गणित में पूरे अंक लाऊँ।
पिता- मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।